जनवरी, 2022

हरित ख़बर

सस्टेनेबल डेवलपमेंट और इको टूरिज्म विश्व भर में सकारात्मक पर्यावरण बदलाव ला रहा है। जानिए कैसे पूर्व शिकारी नियशी समुदाय अब अरुणाचल प्रदेश में ग्रेट हॉर्नबिल के संरक्षण में जुटा हैं।

COMICS POWER!
WORLD COMICS INDIA

एच सी एल फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया की एक पहल

HCL
HCL FOUNDATION

विलुप्त हो रहे पक्षी

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की कहानी

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड यानी गोडावण पक्षी भारत के घास वाले मैदानों और पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में पाया जाने वाला एक बड़ा और शानदार पक्षी है। 2008 में, दुनिया भर में बस्टर्ड की आबादी लगभग 300 थी, हालांकि, वर्तमान में व्यस्क बस्टर्ड की संख्या 60 से 250 के बीच ही हैं। यह एक लुप्त होती प्रजाति का पक्षी है जो मानवीय गतिविधियों, मुख्य रूप से खनन और शिकार किए जाने के कारण विलुप्त हो रहा है।

आमतौर पर ऐसा कहा जाता है कि बस्टर्ड कभी भारत के राष्ट्रीय पक्षी की उपाधि का दावेदार था, जिसे सोन चिरइया के नाम से भी जाना जाता है। इस खिताब को न पाने के बाद, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड अवैध शिकार, मूल जगह के अतिक्रमण और भोजन न मिलने जैसे खतरों का सामना कर रहे हैं। 'सोन चिरइया' शब्द शायद कहानियों में ही रह जाएगा अगर इस चिड़िया को विलुप्त होने से न रोका गया।

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के संरक्षण में जुटा है रूरल इंडिया सपोर्ट ट्रस्ट

रूरल इंडिया सपोर्ट ट्रस्ट (आरआईएसटी) की स्थापना 2009 में हुई थी, बाद में वर्ष 2020 में उन्होंने ग्रेट इंडियन बस्टर्ड पक्षी के संरक्षण की परियोजना शुरू की। राजस्थान में बस्टर्ड को बचाने में सहायता करने के लिए आरआईएसटी ने वाईल्ड लाइफ कंजर्वेशन सोसायटी (डब्लूसीएस) के साथ काम शुरु किया। ये पहल वर्तमान में डेजर्ट नेशनल पार्क, जैसलमेर और पोखरण में काम कर रही है, जो ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के पाए जाने वाली दो प्रमुख जगह हैं।

ये परियोजना सामुदायिक भागीदारी के साथ चल रही है और बस्टर्ड को विलुप्त होने से बचाने के मकसद से संगठन ने विभिन्न स्थानीय व्यक्तियों और समुदायों को प्रशिक्षित किया है। इसमें विभिन्न सरकारी प्राधिकरणों और अन्य गैर सरकारी संगठनों की सहायता से स्थानीय प्रभावशाली लोगों को भी जोडकर काम किया जा रहा है।

घातक है घास के मैदानों की अनदेखी

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड मूल रूप में घास के मैदान के इको सिस्टम से जुडा हैं। पूरे देश में घास के मैदानों की गंभीर रूप से अनदेखी हुई है। इन घास के मैदानों की प्रजातियां 95 प्रतिशत विलुप्त हो चुकी है।

ये घास के मैदान वनस्पति और कई लुप्त हो रहे जानवरों और पक्षियों की प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

मनुष्यों और जानवरों दोनों की जीविका में घास के मैदानों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिसमें मनुष्य घास के मैदानों को घरेलू मवेशियों के चरागाह के रूप में इस्तेमाल करते हैं, वहीं पशु और पक्षी घास के मैदानों को अपने आश्रय के रूप में और शिकारियों से खुद को सुरक्षित रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

ऐसे ही इको सिस्टम में बस्टर्ड खुली जमीन पर अपना घोंसला बनाते हैं। चूंकि यह एक बड़ा पक्षी है, इसलिए यह एक प्रजनन काल के दौरान सिर्फ एक अंडा देता है। मादा बस्टर्ड बच्चे के लिए माता–पिता दोनो की भूमिका निभाती है, अगर अंडा शिकारियों द्वारा नष्ट कर दिया जाता है या अंडा बेकार निकलता है तभी मादा बस्टर्ड अपना दूसरा अंडा देती है। घास के मैदानों के दिन–ब–दिन घटते घनत्व और कमजोर कानूनी ढांचे ने इन प्रजातियों को गंभीर रूप से संकटग्रस्त स्थिति में ला खड़ा कर दिया है।

एचसीएल हरित वार्ता एचसीएल फाउंडेशन की पर्यावरण पर केंद्रित सीएसआर पहल एचसीएल हरित ने मासिक हरित ग्रीन सत्र की शुरूआत की है। अक्टूबर 2021 से शुरू हुए इस कार्यक्रम में सरीसृप, मकड़ियों और शिकारी पक्षियों पर तीन सूचनात्मक और व्यावहारिक व्याख्यान आयोजित किए जा चुके हैं।

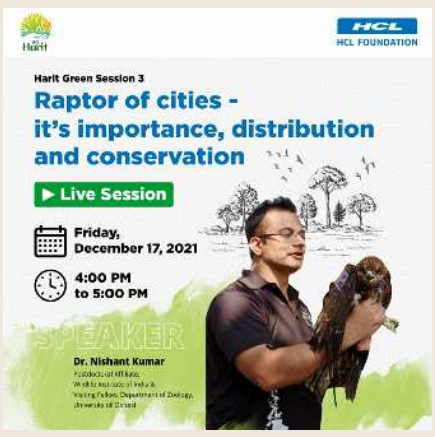

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के विजिटिंग फेलो डॉ निशांत कुमार द्वारा शिकारी पक्षियों पर 17 दिसंबर, 2021 को ऑनलाइन वार्ता की गई। 'शहरों के शिकारी पक्षी – इनका महत्व, वितरण और संरक्षण' शीर्षक वाली वार्ता में शहरी पारिस्थितिकी तंत्र में चील, बाज और गिद्धों जैसे शिकारी पक्षियों के महत्व पर चर्चा की गई। चीलों पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि ये पक्षी शहरी इलाकों में इंसानों के साथ रहना पसंद करते हैं, इंसानों और चीलों का संबंध ऐसा है, जो चीलों और इंसानों दोनों को फायदा पहुंचाता है। भोजन पर उनकी निर्भरता को इंसान की गतिविधियों से जोड़ा गया है। छोड़े गए खाद्य पदार्थों जैसे बचे हुए मांस को अक्सर उनके पास फेंक दिया जाता है और वे झुग्गी–बस्तियों के पास चूहों और कबूतरों का शिकार भी करते हैं और इस तरह प्राकृतिक कीट को नियंत्रण करने में मदद करते हैं। डॉ निशांत कुमार ने मनुष्यों द्वारा उनके घोंसलों के लिए खतरा पैदा करने पर भी चर्चा की और इस विचार के साथ निष्कर्ष निकाला कि हमें सावधान होने की जरूरत है, प्राकृतिक अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों को विकसित करने और शिकारी पक्षियों को समायोजित करने के लिए हमारे बुनियादी ढांचे को डिजाइन करने की आवश्यकता है।

इस श्रृंखला में पहली वार्ता भारतीय वन्यजीव संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिक डॉ. अभिजीत दास के साथ शुरू हुई। बातचीत का शीर्षक था 'सरीसृप, उनका महत्व और उनसे जुड़े मिथक', इसमें उन्होंने सांपों जैसे सरीसृपों की मानवीय गलतफहमी के कारण मानव–वन्य जीव संघर्ष के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

वर्तमान में डॉ. दास एक परियोजना से जुड़े हुए हैं, जो जागरूकता फैलाने के साथ पारिस्थितिकी तंत्र में सरीसृपों के महत्व और स्थानीय समुदायों को विभिन्न सरीसृप प्रजातियों के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रशिक्षित करती है।

इस श्रृंखला में दूसरी वार्ता 12 नवंबर, 2021 को हुई। एचसीएल की हरित वार्ता ने आईआईएसईआर में डॉक्टरेट छात्र अश्विन वारुदकर को 'मकड़ियों, उनकी विशिष्टता और महत्व' पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मकड़ियों की जैविक बारीकियों को विस्तार से बताया, साथ ही मकड़ियों की विविधता को समझाया जिन्हें हम अपने घरों, शौचालयों, खेतों और जंगलों में पाते हैं। मकड़ियाँ अपने भोजन के लिए कीड़ो और कीटों पर निर्भर करती हैं और इसलिए मकड़ियां को कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में अनुकूल जैविक नियंत्रण एजेंट के रूप में देखा जाता है।

जीने का अधिकार

पुष्पा

आज के समय में, पर्यावरण–पर्यटन यानी इको टूरिज्म को पारिस्थितिक रूप से उपयोगी पर्यटन के रूप में देखा जाता है, जो यात्रा और प्रकृति की सुंदरता की एक झलक पाने के साथ साथ स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण में भी योगदान करता है। पर्यावरण–पर्यटन कई उददेश्यों को पूरा करता है, जैसे पारिस्थितिक संरक्षण के लिए धन जुटाना, स्थानीय समुदायों को रोजगार प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाना और निरंतर विकास के बारे में जागरूकता पैदा करना।

ग्रेट हॉर्नबिल पर मंडराता संकट

हॉर्नबिल (धनेश) बड़ा पक्षी है, जो अपनी शानदार और अदभुत चोंच के लिए जाने जाता है। यह जंगल के इको सिस्टम को संरक्षित करने के लिए आवश्यक है, क्योंकि वह जंगली पौधों के बीज को फैलाने में मदद करता है। भारत में हॉर्नबिल की नौ प्रजातियां पाई जाती हैं, जो इस तरह हैं– भारतीय ग्रेट हॉर्नबिल (भारत में पाए जाने वाले), मालाबार ग्रे हॉर्नबिल (पश्चिमी घाट में देखी जाती है), मालाबार पाइड हॉर्नबिल (भारत और श्रीलंका में) और लुप्त हो रहा ग्रेट हॉर्नबिल जिसको व्यापक रूप से इन स्थानों पर देखा जा सकता है।

हॉर्नबिल घरेलू चिड़ियां हैं, इनमें मादाएं अपने अंडे को पेड़ में मौजूद सुराखों में देती हैं और अंडे सेहने के लिए दो से तीन महीने तक आराम करती हैं। इस बीच, नर हॉर्नबिल भोजन एकत्र करता है और शिशुओं को भोजन देता है। बड़े पेड़ और घने जंगल उनकी प्रजनन और जैविक आवश्यकताओं के लिए जरूरी हैं मगर अंधाधुंध वनों की कटाई और शिकार के चलते भी वे खतरे में आ गए हैं। दुनिया भर में पाई जाने वाली हॉर्नबिल की 62 प्रजातियों में से 26 प्रजातियां खतरे में हैं। हालांकि, अरुणाचल प्रदेश का एक स्थानीय समुदाय अनेक संगठनों के साथ लुप्त हो रहे ग्रेट हॉर्नबिल के संरक्षण के लिए पूरी तरह से नई रणनीति के साथ जुटा है।

नियशी समुदाय और नेचर कंजरवेशन फाउंडेशन

नियशी नामक आदिवासी समुदाय सदियों से अरुणाचल प्रदेश के जंगलों में रहता आ रहा है। वे घने जंगलों और 'पक्के टाइगर रिजर्व' की सीमा में रहते हैं और उनका ग्रेट हॉर्नबिल सहित बड़ी संख्या में विदेशी पक्षियों का शिकार करने का इतिहास रहा है।

ग्रेट हॉर्नबिल एक शानदार पक्षी है, जो अपनी बड़ी और चमकीली पीली चोंच के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। इसका नाम इसकी चोंच के ऊपर एक सींग जैसे उभर के कारण पड़ा है, जिसे सींग के रूप में भी जाना जाता है। इस सींग का नियशी समुदाय में सांस्कृतिक महत्व है, और वे इसे एक टोपी के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यह नियशी पुरुषों के लिए उनकी आदिवासी पहचान और उनकी मर्दानगी के प्रतीक के रूप में अनिवार्य है। इसी के चलते ग्रेट हॉर्नबिल का भारी संख्या में शिकार किया गया। कभी शिकारी रहा नियशी समुदाय अब स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और नेचर कंजरवेशन फाउंडेशन (एनसीएफ) द्वारा शुरू किए गए हॉर्नबिल प्रजातियों के बचाव और संरक्षण अभियान में सक्रिय भागीदारी निभा रहा है।

पर्यावरण–पर्यटन (इको टूरिज्म) और लगातार हुए विकास के चलते आज इस समाज में भी भारी बदलाव आया। एनसीएफ ने कुछ स्थानीय संगठनों के साथ संरक्षण उद्देश्यों के लिए नियशी समुदाय को प्रशिक्षण में सहायता दी। ये संरक्षण कार्यक्रम अब उनकी आजीविका का हिस्सा बन गया है। अपनी संस्कृति और आदिवासी पहचान को बनाए रखने के लिए, नियशी पुरुष अब लकड़ी या कपड़े से बनी चोंच को सिर पर पहनते हैं। ग्रेट हॉर्नबिल और नियशी समुदाय की ये कहानी इस बात का उदाहरण है कि कैसे पर्यावरण–पर्यटन यानी इको टूरिज्म पर्यावरण की जरूरतों को पूरा करता है और इस पूरी प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों को भी सशक्त बनाता है।

nature conservation foundation

एनसीएफ की मुहिम

द नेचर कंजर्वेशन फाउंडशन (एनसीएफ) 1996 में स्थापित एक परोपकारी ट्रस्ट है। जिन्होंने हिम तेंदुए, हाथी, मकड़ियों और हॉर्नबिल जैसी लुप्त हो रही प्रजातियों के संरक्षण और निगरानी में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एनसीएफ का मकसद वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा देते हुए उसके साथ रह रहे समुदायों के लिए आजीविका के साधनों की सुरक्षा और वृद्धि करना है।

एनसीएफ के कार्यक्रम सामुदायिक भागीदारी के साथ चलाए जाते हैं और 2020 तक उन्होंने लगभग 40 हॉर्नबिल घोंसलों की निगरानी की और 152 हॉर्नबिल चूजों को सफलतापूर्वक उड़न भरने में मदद की है।

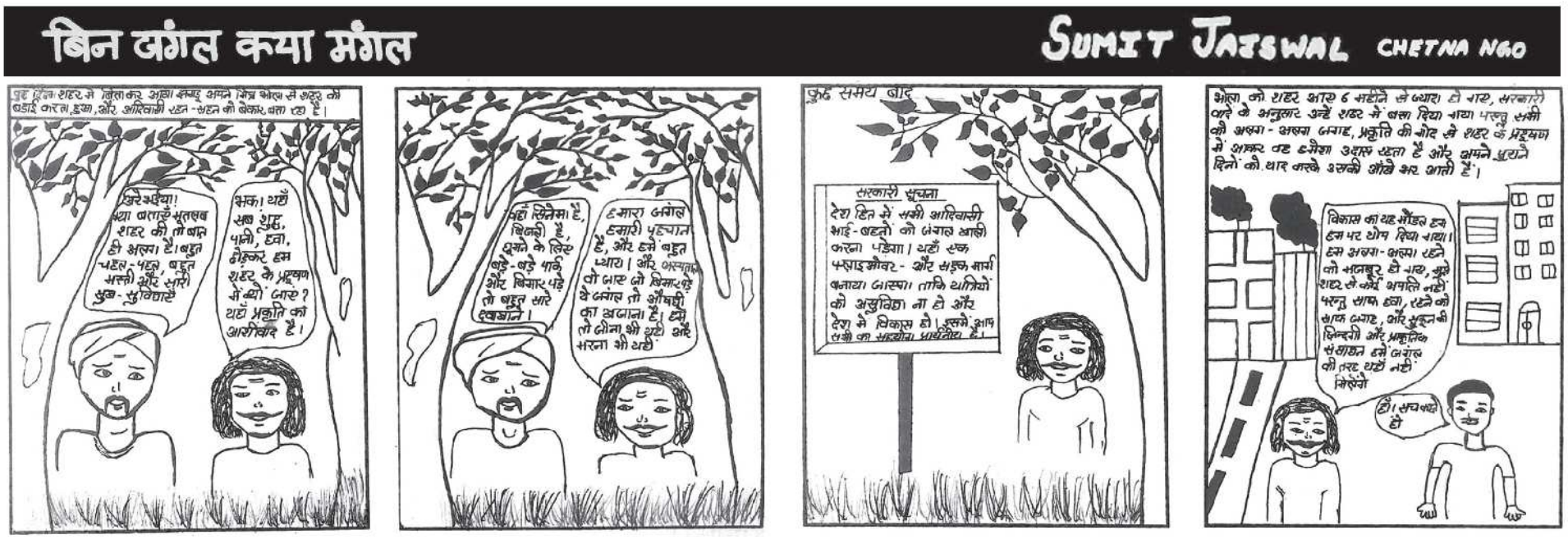

Photo: Latin Times

यमुना की सफाई की कार्ययोजना पारित

यमुना को साफ करने के लिए सरकारों, उघमियों और नागरिक समाज द्वारा 1990 के बाद से कई प्रयास किए गए हैं। हाल ही में दिल्ली सरकार ने फरवरी 2025 तक यमुना को स्नान–मानकों पर वापस लाने के लिए छह–सूत्रीय कार्य योजना का प्रस्ताव दिया है, और नए तरीके से ठोस अपशिष्ट और सीवेज उपचार पर ध्यान केंद्रित किया है।

पिछले दिनों यमुना की जहरीले झाग वाली तस्वीरें वायरल हुई थीं। यमुना नदी में तैरता हुआ जहरीला झाग दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनुपचारित सीवेज में फॉस्फेट और सर्फेक्टेंट होने का संकेत देता है। इस प्रदूषित पानी के थोडे समय के संपर्क (इस्तेमाल) से ही त्वचा में जलन और एलर्जी होती है, जबकि लंबे समय तक इस पानी के संपर्क में रहने से तंत्रिका संबंधी समस्याएं और हार्मोनल असंतुलन हो जाता है।

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने चार प्रमुख नालों पर मौजूदा सुविधाओं के सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक प्रस्ताव की घोषणा की। ये चार नाले नजफगढ़, गाजीपुर, बादशाहपुर और वजीराबाद में स्थित हैं, साथ ही नई स्थानीय नाली सुविधाओं का भी निर्माण किया जाएगा। नई कार्य–सूची में अपशिष्ट जल (गंदा पानी) की सीवेज उपचार क्षमता को प्रतिदिन 600 मिलियन गैलन से बढ़ाकर 750–800 मिलियन गैलन करना है।

सिर्फ एक नदी भर नहीं है यमुना

यमुना नदी को स्थानीय बोली में 'जमना' भी बोला जाता है, यह उत्तराखंड के हिमालय से निकलने वाली एक प्रमुख उत्तर भारतीय नदी है, जो हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश से होकर बहती है। यमुना 1,376 किलोमीटर तक बहती है और प्रयागराज (यूपी) के संगम में मिल जाती है और वह गंगा नदी की सबसे लंबी सहायक नदी है। वर्तमान में तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण, यमुना नदी उत्तर भारत की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक बन गई है।

यमुना नदी के प्रदूषण के बारे में सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि यमुना की लंबाई का केवल दो प्रतिशत भाग ही दिल्ली से होकर बहता है, फिर भी दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र यमुना के कुल प्रदूषण के एक बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं। शहर का सारा सीवेज और ज़हरीला औद्योगिक तरल कचरा दिल्ली के ड्रेनेज सिस्टम यानी जल निकासी व्यवस्था में मिल जाता है, जो बाद में यमुना में चला जाता है। तरल अपशिष्ट में पारा, सीसा, टिन जैसी भारी धातुएँ शामिल होती हैं जो वे जलीय जीवों के लिए घातक होती हैं।
यमुना नदी का बहुत अधिक आर्थिक महत्व है क्योंकि यह सिंचाई और कृषि गतिविधियों में सहायोग करती है। एक पवित्र नदी के रूप में लोकप्रिय, यमुना का उपयोग मछुआरे, धोबी और किसान करते हैं। यह नदी एक समृद्ध आवासीय जल व्यवस्था को देने में भी मदद करती है। औद्योगिक अपव्यय और पर्यावरणीय खतरों की उपस्थिति इस नदी के सभी लाभों के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो रही है। गौरतलब है कि 50 मिलियन से अधिक लोग यमुना पर निर्भर हैं और यह दिल्ली की जल आपूर्ति का 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है।

मेरी गलती

मिस्टर टी चेस्दा

शहरी जलीय वातावरण को पुर्नजीवित करेगी 'रिवाइवल' परियोजना

प्राचीन काल से ही तमिलनाडु के स्थानीय समुदायों ने टैंक प्रणाली का इस्तेमाल किया है। पहले, टैंकों की उपस्थिति ने शहरों में हाइड्रोलॉजिकल चक्रों को नियमित करने में मदद की है, लेकिन शहरी विस्तार ने स्थिति को बहुत उलट दिया है।

तमिलनाडु के मदुरै शहर में 100 से अधिक टैंक और चैनल हैं, जो काफी हद तक सूख गए या डंपिंग साइट में बदल गए हैं। घटते पारंपरिक जल तालाबों की समस्या से निपटने के लिए, धान फाउंडेशन के जल समूह द सेंटर फॉर अर्बन वाटर रिसोर्सेज (सीयूआरई) ने एचसीएल–फाउंडेशन के साथ अपनी परियोजना 'रिवाइवल' के लिए सहयोग लिया।
इस पहल में, सामूहिक योजना और कार्य के माध्यम से टैंक प्रणाली को बहाल करने, जल संसाधनों को सुरक्षित करने और इसके उद्देश्यों को फिर से परिभाषित करने पर ध्यान केंद्रित किया है। इस परियोजना का मकसद वंदियूर झील की 640 एकड़ जमीन को सुधारना है।

'रिवाइवल' का मुख्य मकसद शहरी जलीय वातावरण की रक्षा करना, निवासियों के रहने और स्वच्छता की स्थिति को बढ़ाना और जल संसाधनों को सुरक्षित करके आजीविका में सुधार करना है। इस परियोजना का मकसद जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण के उद्देश्यों को पूरा करना भी है।

पारदर्शी उमंगोट नदी

क्या कोई नाव उड़ सकती है? खैर, अगर आप इस फोटो को देखते हैं, तो आप ऐसा आसानी से सोच सकते हैं!

ये तस्वीर मेघालय राज्य के उमंगोट (दावकी) नदी की है। नदी का पानी इतना साफ और पारदर्शी है कि लगता है मानो नाव हवा में है! भारत सबसे ज्यादा प्रदूषित नदियों का देश होने के साथ ही दुनिया की सबसे स्वच्छ नदियों का देश भी है।

शिलांग से 100 किमी दूर यह नदी बांग्लादेश में से बहती हुई, राज्य की खासी और जयंतिया पहाड़ियों के बीच एक प्राकृतिक विभाजन करती है। पीएम के मन की बात कार्यक्रम में भी इस नदी को विशेष सराहना मिली थी।

सामुदायिक भागीदारी के साथ निरंतर बढ़ता एचसीएल–हरित का दायरा

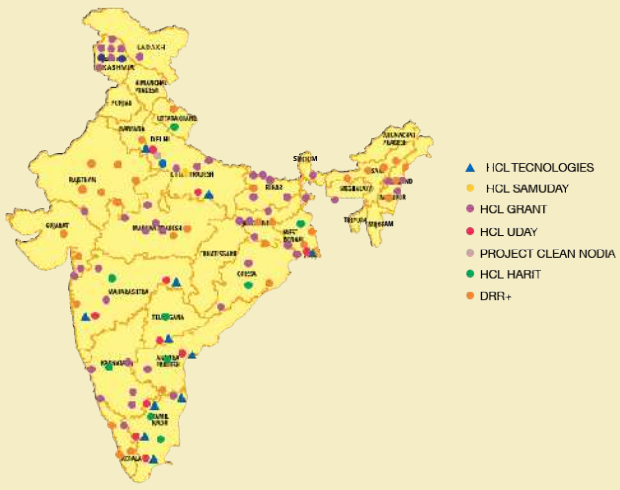

एचसीएल फाउंडेशन ने 'एचसीएल हरित–द ग्रीन' सीएसआर इनिशिएटिव को जून 2021 में पर्यावरणीय कार्य के लिए एक विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में लॉन्च किया। एचसीएल हरित का मकसद गैर सरकारी संगठनों और सरकारों के साथ जुड़ना और पर्यावरण के अनुकूल और पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली जैसे कार्यों को बढ़ावा देना है। एचसीएल हरित का विजन सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से "स्वदेशी पर्यावरण प्रणालियों को संरक्षित, पुनर्स्थापित और बढ़ाने और एक स्थायी तरीके से जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करना है।

एचसीएल हरित 'सहभागी व सम्मिलित दृष्टिकोण' का पालन करते हुए हरित आवरण को बढ़ाने, देशी जैव विविधता के संरक्षण, जल निकायों के कायाकल्प, तटीय और समुद्री आवासों में सुधार और पर्यावरण जागरूकता पैदा करने पर काम कर रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय संकेतक ढांचे और सतत विकास (SDGs) के लक्ष्यों को हासिल करना है। हरित कार्यक्रम को नौ राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में भागीदारी के सूत्र के तहत लागू किया गया है। सार्वजनिक–निजी भागीदारी का यह मॉडल जवाबदेही को मजबूत करेगा और साथ ही जिला प्रशासन के साथ बुनियादी कामों को अंजाम देगा। इसके अलावा, एचसीएल फाउंडेशन के अनुदान के माध्यम से, पर्यावरण, अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण शिक्षा, टिकाऊ समाधान आदि के क्षेत्र में काम करने वाले विभिन्न गैर सरकारी संगठन एचसीएल हरित कार्यक्रम का हिस्सा बन रहे हैं।

सकारात्मक बदलाव की बयार

एचसीएल फाउंडेशन ने दिसंबर 2021 में कर्नाटक वन विभाग के साथ एक समझौता पत्र (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

इस एमओयू का मकसद देशी प्रजातियों के वृक्षारोपण में योगदान देना और समुदाय आधारित वन संरक्षण की दिशा में स्थानीय हिस्सेदारों को शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है।

नवंबर 2021 में, नोएडा शहर को भारत के सबसे स्वच्छ मध्यम श्रेणी के शहर (3–10 लाख की आबादी वाले) के लिए 'स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार' मिला था, जो जिला प्रशासन और एचसीएल फाउंडेशन के स्वच्छ नोएडा अभियान के बीच सहयोग के कारण संभव हुआ।

एचसीएल फाउंडेशन ने 2019 में लखनऊ नगर निगम (एलएमसी) और 'गिव मी ट्रीज ट्रस्ट' के सहयोग से लखनऊ में बड़े पैमाने पर वनीकरण और जल संरक्षण की जिम्मेदारी भी ली। इस कार्यक्रम को 'अटल–उपवन' कहा जाता है, जिसका नाम पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की याद में रखा गया है।
यहां अब तक 60,000 पेड़ लगाए जा चुके हैं और जल संचयन के लिए 10 वाटर होल तैयार किए जा चुके हैं साथ ही दो कम्पोस्ट गड्ढों के लिए भी काम कर रहे हैं।

एक नज़र आंकडों पर

363,722 नए पौधे लगाए गए
155.8 एकड़ जमीन को जगंल में तब्दील किया गया
~340,000 किलो कार्बन फैलने से रोका गया
62 तालाबों को पुनर्जीवित किया
~5,200 मिलियन लिटर्स पानी रोकने की क्षमता बढ़ाई गयी
32,654 जानवरों के जीवन को प्रभावित किया
32 पर्यावरण शिक्षा के मॉड्यूल तैयार हुए
~8,000 किलो घोस्ट नेट साफ किया गया
67 कम्पोस्ट पिट का निर्माण किया
200,000 किलो बायोमास को जलने से रोका गया

चीड़ का पेड़ समस्या नहीं

HIMANSHU PANT RASTA (NGO)

शहरी बुनियादी ढांचे में सतत सुधार : शहरीकरण की बड़ी चुनौती

भारत में शहरों का तेजी से विस्तार हो रहा है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत की शहरी आबादी सालाना दो प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, और 2030 तक, भारत में 60 करोड़ से अधिक लोग शहरी क्षेत्रों में रहने लगेंगे। यह आर्थिक विकास की दृष्टिकोण से तो उत्साहजनक है, लेकिन हमें उन पर्यावरणीय चुनौतियों को भी ध्यान में रखना होगा, जो तेज शहरीकरण से उभरेंगी। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन वैश्विक पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक उभरता हुआ खतरा है और इसने शहरों और शहरी क्षेत्रों में भविष्य की योजना बनाने में चुनौतियां पैदा कर दी हैं।

शहरी आबादी में वृद्धि का मतलब जल संसाधनों, परिवहन और बिजली पर बढ़ती निर्भरता भी है। वही एक चुनौती शहर की गरीब आबादी के लिए उचित आवासीय बस्तियों की कमी है, जो आवास की बढ़ती कीमतों के कारण मलिन बस्तियों में रहते हैं। अगर शहरों को अनियोजित तरीके से विकसित किया जाएगा, तो वायु और जल प्रदूषण के बढ़ने का खतरा है। इन मुद्दों के हल के लिए, जलवायु अनुरुप बुनियादी ढांचा और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग आगे बढ़ने के लिए प्रभावी तरीका हो सकता है।

निजामुद्दीन बस्ती शहरी नवीकरण परियोजना ने जीता युनेस्को पुरस्कार

निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण परियोजना को 2021 में यूनेस्को द्वारा संरक्षण के लिए दो पुरस्कार दिए गए हैं और जूरी सदस्यों ने "विरासत को विकास के एजेंडे के केंद्र में रखने की उपलब्धि" की भी सराहना की। आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (एकेटीसी) ने 2007 में दक्षिण दिल्ली नगर निगम और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ साझेदारी करके निजामुद्दीन बस्ती के संरक्षण के प्रयास शुरु किए। एकेटीसी के मुख्य दृष्टिकोणों में से एक, जिसने परियोजना को युनेस्को संरक्षण पुरस्कार जीतने के लिए मदद की, वह है– बस्ती क्षेत्र के पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक, भौतिक और सांस्कृतिक पहलुओं के विकास में समुदाय की राय को शामिल करना। इस सामुदायिक संवाद में सभी हिस्सेदारों की राय शामिल की गयी।

निजामुद्दीन, दिल्ली के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों में से एक है, जो विश्व धरोहर स्थल मुगल बादशाह हुमायूं के मकबरे और सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के लिए लोकप्रिय है। यह हर दिन बड़ी संख्या में पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है, लेकिन यह बुनियादी ढांचे, उचित स्वच्छता आदि जैसे मुद्दो पर संघर्ष कर रहा है।

एचसीएल फाउंडेशन ने मनाया 'विश्व मृदा दिवस'

स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के स्तंभों में से एक है– मृदा स्वास्थ्य । खराब मृदा स्वास्थ्य का जल संसाधनों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है, जो फिर खाद्य संसाधनों और बड़े पैमाने पर जैव विविधता को नुकसान पहुँचाता है। मिट्टी विभिन्न जीवों का आवास भी है, जो पोषक चक्र के नीचे रहते हैं और उसको नियंत्रित करते हैं। इसके अलावा, पौधे भी कार्बन डाई ऑक्साइड को मिट्टी में अवशोषित करने में मदद करते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि मिट्टी का स्वास्थ्य कार्बन को अलग करने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है।

कृषि गतिविधियों में वृद्धि के कारण पूरी दुनिया में मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आई है। मृदा संरक्षण के लिए जागरूकता और सही तकनीकों का प्रसार करने के लिए, एचसीएल फाउंडेशन मिट्टी और उसके लवणीकरण के मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहा है।

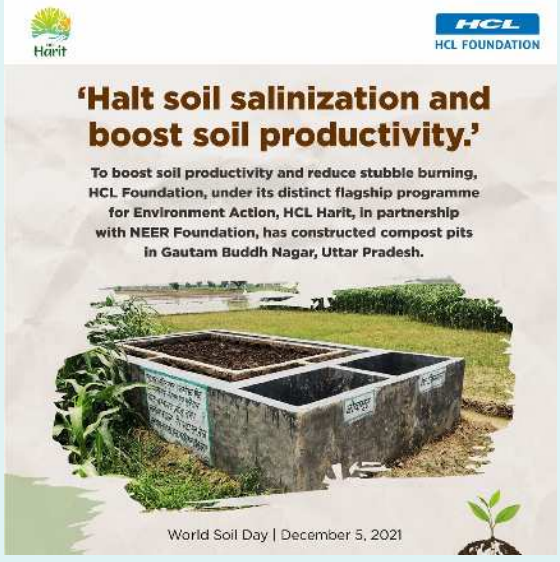

एचसीएल फाउंडेशन की पर्यावरणीय पहल 'एचसीएल हरित' के तहत, संगठन ने नमक लवणीकरण और मिट्टी उत्पादकता अभियान को बढ़ावा देना' शुरू किया है, जिसका मकसद मिट्टी के संरक्षण और प्रबंधन के लिए चुनौतियों और बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र के लिए मिट्टी के स्वास्थ्य महत्व पर जागरूकता पैदा करना है।

एचसीएल फाउंडेशन ने उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर में खाद के गड्ढे बनाने के लिए 'द नीर फाउंडेशन' के साथ साझेदारी की है।

वे कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करके मिट्टी के कायाकल्प के लिए कई तरीकों और तकनीकों का पता लगाने के लिए यूपी के कोटगांव में 'से ट्रीज़' के साथ भागीदारी में काम कर रहा है। अपने खुद के स्तर पर, एचसीएल फाउंडेशन ने किचन गार्डन में खाद की जरूरत पर जोर दिया है।

पक्षी गायन प्रतियोगिता – संरक्षण को नया खतरा

दुनिया भर से

ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन जर्नल में मानव–पक्षी संबंध पर हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट से पता चला है कि दुनिया भर में सोंगबर्ड्स यानी पक्षी–गायन की मांग बढ़ी है। दुनिया भर में आयोजित होने वाले पक्षी गायन प्रतियोगिताओं में मनुष्यों द्वारा उनके पंखों, गीतों और गति को आंका जाता है, जबकि पक्षियों को सुंदर पिंजरों के अंदर रखा जाता है।

इन प्रतियोगिताओं से विजेता पक्षी मालिकों को गौरव, पुरस्कार के साथ साथ अच्छा पैसा भी मिलता हैं। इस तरह के चलन जंगली पक्षियों की आबादी के लिए खतरा साबित हो रहे हैं।

यह खतरा खासतौर से दक्षिण पूर्व एशिया में सिंगापुर और थाईलैंड में है। प्रकाशित जर्नल यह भी बताता है कि वर्तमान में, पक्षियों की 36 प्रजातियों का इस्तेमाल करते हुए कम से कम 22 देशों में पक्षी–गायन प्रतियोगिताएं हो रही हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ केन्या की जंग

अफ्रीकी देशों में प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ जंग में केन्या एक मार्गदर्शक बनकर उभरा है। यह पूर्वी अफ्रीका का पहला देश है, जिसने एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के इस्तेमाल की सीमा का पालन किया है और यहां तक कि समुद्र और ताजे पानी की जगह में प्लास्टिक कूड़े को फेंकने से रोकने के लिए 'स्वच्छ समुद्र' जैसी पहल पर हस्ताक्षर किए हैं।

केन्या के प्रयास उनके नीति–निर्माण में दिखाई दिए क्योंकि उन्होंने अपने राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षित जैवमंडल (बायोस्फीयर रिजर्व) से प्लास्टिक की बोतलों, कपों और अन्य प्लास्टिक छुरी–कांटे के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया है।

ट्रैशकैन और आँगन का मुकाबला

मर्सी

जेन गुडॉल 'वाइल्डलाइफ लीजेंड अवार्ड' से सम्मानित

सैंक्चुअरी नेचर फाउंडेशन ने प्राइमेटोलॉजी पर दुनिया की अग्रणी विशेषज्ञ डॉ जेन गुडॉल को अपने सबसे प्रतिष्ठित 'वाइल्ड लाइफ लीजेंड अवार्ड' से सम्मानित किया है। प्राइमेटोलॉजी विकास का वैज्ञानिक अध्ययन नर–वानर (बंदर, चिंपैंजी, गोरिल्ला, आदि) के व्यवहार पर है। वह तंजानिया में चिम्पांजी के संरक्षण, और सामाजिक और व्यवहार संबंधी अध्ययनों में अपने योगदान के लिए विश्व भर में जानी जाती हैं।

वर्ष 2002 में, उन्हें बतोर 'संयुक्त राष्ट्र शांति दूत' भी नामित किया गया था। सभी लैंगिक–रूढ़ियों को तोड़ते हुए, गुडऑल ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया, ऐसे समय में जब जीव–विज्ञान को पुरुषों के एकाधिकार के रूप में देखा जाता था। उसके अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि भावनाओं, बुद्धि, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में मनुष्यों और चिंपैंजी के बीच काफी समानताएं हैं। उसने पाया कि चिंपैंजी टीले से चींटियों और दीमकों को निकालने के लिए उपकरण भी बनाते हैं और इंसानों की तरह ही जटिल जीव हैं।

पुस्तक एवं फिल्म

डाक्यूमेंट्री 'एन इंकनविनिएंट ट्रूथ'

'एन इंकनविनिएंट ट्रूथ' नामक डाक्यूमेंट्री 2006 में रिलीज हुई थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर के व्याख्यान पर आधारित और डेविड गुगेनहेम द्वारा निर्देशित, इस डाक्यूमेंट्री को ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर सबसे शक्तिशाली डाक्यूमेंट्री के रूप में सम्मानित किया गया। डाक्यूमेंट्री, फिल्म समीक्षकों द्वारा प्रशंसित है और ऑस्कर भी जीत चुकी है। इसका प्रमुख योगदान ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर अंतराष्ट्रीय जागरूकता फैलाने और अमेरिका में पर्यावरण आंदोलन को फिर से सक्रिय करने के रुप में जाना जाता है। यह दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम का भी हिस्सा है। डॉक्यूमेंट्री जिन खास मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती है, वे हैं बर्फ की चादरों का पिघलना, गिरती जैव विविधता, जंगल में आग, वनों की कटाई आदि। इन विषयों का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण किया जाता है और फिल्म ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए सामुदायिक जुड़ाव की जरूरत का भी तर्क देती है।

इस डाक्यूमेंट्री को आप यूट्यूब और अन्य स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं।

आज भी खरे हैं तालाब – अनुपम मिश्रा

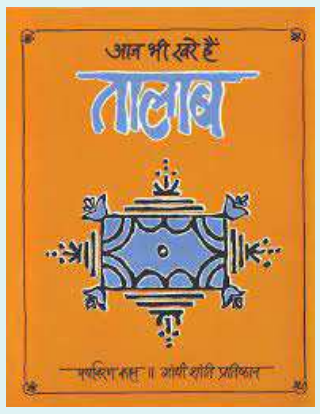

अनुपम मिश्रा द्वारा लिखित पुस्तक, आज भी खरे हैं तालाब' को भारत में खासतौर से उत्तर व पश्चिमी भारत में पारंपरिक जल निकायों के लिए एक ऐतिहासिक पुस्तक माना जाता है। अनुपम मिश्रा एक प्रसिद्ध हिंदी लेखक और पर्यावरणविद् थे, जो पहले गांधी शांति फाउंडेशन से भी जुड़े थे।

पारंपरिक जल संरक्षण के बारे में संवेदनशील और ज्ञानवर्धक कहानी से मिश्रा अपने पाठकों को राजस्थान के कई गांवों में ले जाते हैं। जल संरक्षण और तालाब बनाना न केवल एक संसाधन प्रबंधन योजना है बल्कि राजस्थान की संस्कृति, विरासत, लोककथाओं और तकनीकी में नयेपन का भी एक हिस्सा है। इन परिदृश्यों में तालाबों का निर्माण किसी घटना की याद में या किंवदंतियों आदि का सम्मान करने के लिए किया गया था। वह तालाबों और संबंधित रिवाजों के लिए विभिन्न बोलचाल और अज्ञात शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। पुस्तक सदियों पुरानी संस्कृति और पर्यावरण प्रथाओं की एक झलक पेश करती है। यह पुस्तक सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं सहित कुल 19 भाषाओं में उपलब्ध है।

टावर से तबाही

एम. आदिलक्ष्मी

पर्यावरणीय प्रभाव आंकलन जिसे ईआईए (एनवायरमेंट इंपैक्ट असेसमेंट) के रूप में जाना जाता है। किसी भी परियोजना के सफल कार्यान्वयन के बाद उसके पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए यह एक वैज्ञानिक और कानूनी प्रक्रिया है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 2020 में ईआईए कानूनों में बदलाव का प्रस्ताव दिया था, जो 2006 से ईआईए के कई महत्वपूर्ण तत्वों को प्रभावित करता है। ईआईए उन परियोजनाओं के लिए आवश्यक होता है, जिनमें खनन, बिजली संयंत्रों, राजमार्गों और उद्योगों को राज्य द्वारा पर्यावरण मंजूरी जैसे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्रोजेक्ट होते हैं।

भारत में, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 ईआईए को किया जाता है, जो ईआईए की कार्यप्रणाली पर निर्देश देता है। ऐसा समझा जाता है कि नया 2020 कानूनी मसौदा पूरी जांच के बिना परियोजनाओं को मंजूरी की अनुमति देगा और परियोजना पूरी होने के बाद वैज्ञानिक जांच को कमजोर कर सकता है।

टुटते मिथक

क्या अधिक जनसंख्या है जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार?

हाल ही में, यूनाइटेड किंगडम के प्रिंस विलियम ने अफ्रीका में वन्यजीवों में गिरावट के लिए मानव आबादी में वृद्धि को जिम्मेदार ठहराया। 'ओवर पॉपुलेशन' पर ऐसा तर्क अक्सर टीवी शो, फिल्मों में सुनाई देता है और विभिन्न हस्तियों द्वारा इसका समर्थन किया जाता है। हालांकि 'अधिक जनसंख्या' जलवायु परिवर्तन या जैव विविधता में गिरावट के लिए वैज्ञानिक रूप से जिम्मेदार नहीं है। ऐसे तर्क जो हमारी पर्यावरणीय समस्याओं के लिए कुछ आबादी को दोषी ठहराते हैं, वे 'पारिस्थितिकी–फासीवादी' कहलाते हैं। जनसंख्या

वृद्धि वास्तव में प्राकृतिक संसाधनों को असमान रूप से प्रभावित कर सकती है, लेकिन जैव विविधता में नुकसान का कारण आर्थिक हैं। आइए, अब कुछ आर्थिक तथ्यों को जानते हैं, वैश्विक जनसंख्या वृद्धि प्रति वर्ष 1% बढ़ती है, जबकि खपत 3% की दर से बढ़ती है। उच्च खपत, जलवायु संकट का एक प्रमुख कारक है। सच तो यह है कि उच्च खपत कम आबादी वाले समृद्ध और विकसित देशों में अधिक है।

ऑक्सफैम द्वारा वर्ष 2020 में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि यूके में व्यक्तिगत कार्बन उत्सर्जन भारत के (केवल 1.68 टन) कार्बन उत्सर्जन की तुलना में प्रति वर्ष 8.3 टन अधिक है। विश्व में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन औसत 4.7 टन प्रति वर्ष है। इसका मतलब यह है कि जनसंख्या वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन या जैव विविधता के नुकसान के बीच कोई संबंध नहीं है, क्योंकि कम आबादी वाले समृद्ध देशों कार्बन उत्सर्जन के लिए अधिक जिम्मेदार है।

ग्रासरूट्स कॉमिक्स से मिला स्वअभिव्यक्ति का एक माध्यमः तमिलनाडु

अब तमिलनाडु के सामाजिक कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठन के स्टॉफ और स्कूल शिक्षकों के पास आत्म–अभिव्यक्ति और शिक्षण का एक नया माध्यम है– ग्रासरूट्स कॉमिक्स। एचसीएल फाउंडेशन और वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया द्वारा 15 दिसंबर से 24 दिसंबर, 2021 के दौरान एक ग्रासरूट्स कॉमिक्स कार्यशाला का आयोजन किया गया इसमें तमिलनाडु के अलग– अलग हिस्सों के 30 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन अंग्रेजी और तमिल भाषाओं में किया गया।

कार्यशाला का विषय पर्यावरण शिक्षा था और प्रतिभागियों को जल, स्वच्छ प्रकृति, परिवार व पड़ोस, भोजन, पौधों और जानवरों जैसे व्यापक विषयों पर गहराई से परिचित कराया गया। प्रतिभागियों ने इन विषयों पर अपने व्यक्तिगत अनुभवों, विचारों और दृष्टिकोणों को साझा किया। प्रतिभागियों के व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर सत्र के दौरान कई पर्यावरणीय मुद्दे सामने आए। 'होप फाउंडेशन' की अधिलक्ष्मी ने पक्षियों और बीजों के फैलाव पर कॉमिक्स बनाया, जबकि 'ऑफ़र इंडिया' के पदमनाथन ने एक गाँव में समुदाय के नेतृत्व की संरक्षण कार्रवाई पर अपनी पहली कॉमिक्स बनाई। कार्यशाला के सत्र रचनात्मक थे और उसमें कॉमिक्स बनाने की प्रासंगिकता पर भी चर्चा की गई। प्रतिभागियों को कॉमिक्स ड्राइंग के मूल सिद्धांतों और इसकी अभिव्यक्ति के तरीके बताये गये। ग्रासरूट्स कॉमिक्स का सही इस्तेमाल कॉमिक पत्रकारिता से लेकर उपेक्षित मुद्दों को एक संवादात्मक रूप में भी सामने लाना है। कॉमिक्स एक दृश्य संचार के उपकरण के रूप में कार्य करता है और इसके इस्तेमाल से हर व्यक्ति कहानीकार बनने की क्षमता रखता है।

सत्र समाप्ति पर प्रतिभागियों ने एक माध्यम के रूप में कॉमिक्स पर अपनी समझ और दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया साझा की। अपनी प्रतिक्रिया में, प्रतिभागियों ने महसूस किया कि यह अनुभव उनके लिए उत्साहजनक और नया था। कुछ प्रतिभागियों ने बताया कि विभिन्न मुद्दों को संबोधित करने और जागरूकता, पहुंच और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए कॉमिक्स का इस्तेमाल एक उपकरण के रूप में बेहद प्रभावी साबित होगा।

प्राकृतिक संसाधन का विनाश

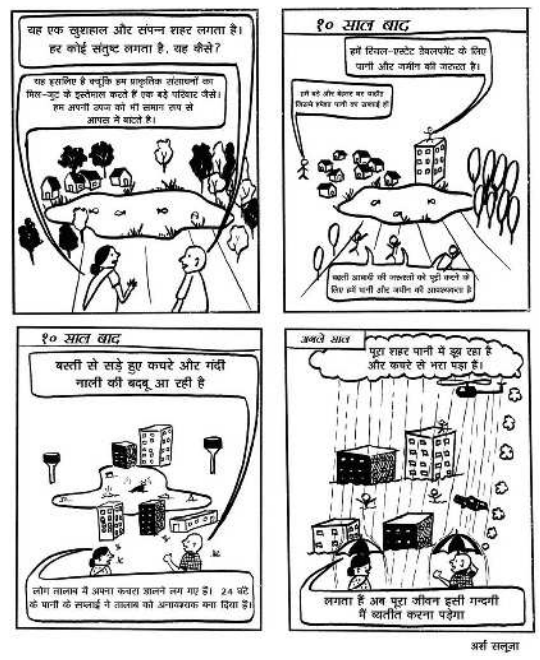

अर्सी सलूजा

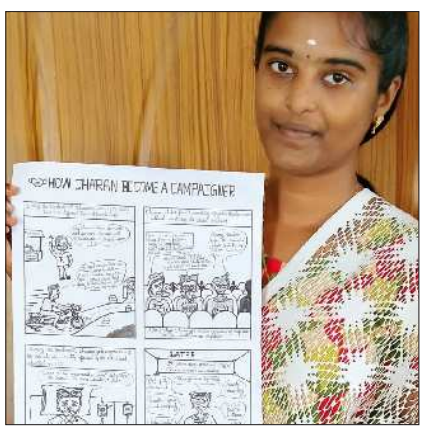

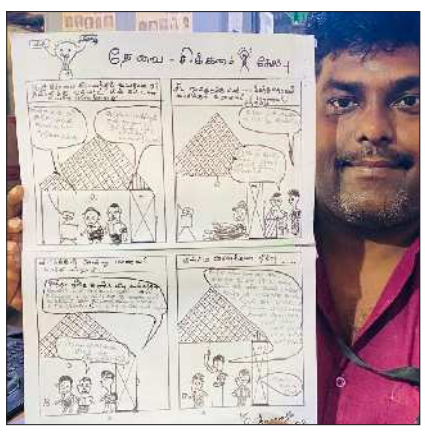

आसान बातचीत ने हमें अपनी शंकाओं को दूर करने में मदद की। एक समूह में अपने विचार साझा करने से हमें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए अच्छे विचार मिलने में मदद मिली। – सुमति

मैंने पढ़ाने के लिए एक अलग पद्धति सीखी। कार्यशाला से प्राप्त प्रतिक्रिया और सुझाव मेरे अंतिम स्केच बनाने के लिए बहुत उपयोगी थे। – अधिलक्ष्मी

कार्यशाला ने हमें अपनी खुद की कॉमिक्स बनाने के लिए आत्मविश्वास दिया है। इसने मेरे रचनात्मक कौशल में सुधार किया। – शीला ग्रेस

यह एक बहुत अच्छा सत्र था और हमने कॉमिक्स की कला के माध्यम से किसी भी मुद्दे को संबोधित करना और अपने विचारों को व्यक्त करना सीखा है– उषा

यह एक बहुत ही मजेदार कार्यशाला थी और हमें इतना अच्छा अवसर देने के लिए वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया का धन्यवाद। – थेनमोझी

कार्यशाला में शामिल किए गए मुद्दे

प्रतिभागियों ने पर्यावरण शिक्षा की व्यापक श्रेणी के तहत विभिन्न मुद्दों और विषयों को कार्यशाला में शामिल किया। जिन व्यापक मुद्दों को शामिल किया गया उनमें से कुछ हैं:

- जल श्रोतों का पुनर्जीवन और सामुदायिक भागीदारी
- जन प्रबंधन
- पक्षी और बीज फैलाव
- अपशिष्ट प्रबंधन और कचरे का निपटान
- देशी बीजों का महत्व
- बिजली की बचत और स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग
- बच्चों के लिए संतुलित आहार का महत्व
- वनों की कटाई
- सूखे की स्थितियों को रोकने के लिए की गई सामुदायिक कार्रवाई
- जानवरों के प्रति सहानुभूति
- अपशिष्ट को रिसाइकिल करना

प्रतिभागियों ने इन मुद्दों में स्थानीय संदर्भ जोड़े और बेहतरीन कॉमिक्स बनायी। उदाहरण के लिए, प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा जैसी आक्रामक प्रजातियों को हटाने के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गई। ऐसी आक्रामक प्रजातियों ने जलाशयों पर कब्जा कर लिया है और उनकी हालत खराब कर दी है। प्रतिभागियों को इन मुद्दों पर चर्चा करते हुए अपने काम का प्रदर्शन करने का भी मौका मिला, जिससे ज्ञान के प्रसार में मदद मिली।

ऊपर दी गई कॉमिक्स में, एक बुजुर्ग दंपत्ति के घर में बिजली का बिल बहुत अधिक आता है। एक पडोसी उनकी मदद करता है जो सीएलएफ बल्ब को एलईडी बल्ब से बदल देता है और बुजुर्ग दंपत्ति को मुफ्त बिजली के यूनिट के बारे में भी बताता है। कॉमिक्स –अमरनाथ

प्रकाशन के बारे में

'हरित खबर', एचसीएल–फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया द्वारा प्रकाशित एक मासिक अखबार है जो पर्यावरण से जुडी खबरों और जरूरी जानकारियों को संजोने के साथ साथ इस काम में जन भागीदारी को बढ़ाने के लिए समर्पित है। पर्यावरण के मुद्दे पर केंद्रित एचसीएल–फाउंडेशन के प्रमुख कार्यक्रम एचसीएल–हरित के पार्टनर संगठनों के कार्यों और उपलब्धियों को एक मंच पर लाने और उनके बीच नेटवर्क स्थापित करने के उदेश्य से इस प्रकाशन का आगाज़ किया गया है। इस प्रकाशन के जरिये हम उम्मीद करते है कि यह देश में इस गंभीर मुद्दे पर एक सार्थक बहस छेड़ने में सफल होगा और साथ ही आम लोगों, विशेषकर बच्चों और युवाओं को और अधिक संवेदनशील बनाने में भी मददगार होगा।

एच सी एल फाउंडेशन

एचसीएल फाउंडेशन देश की प्रतिष्ठित आई टी कंपनी एचसीएल टेक्नोलाजी के कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉसिबिलिटी कार्यक्रमों को लागु करती है। देश ही नहीं बल्कि दुनिया के अनेक विकासपरक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए फाउंडेशन के अपना योगदान दिया है। आम लोगों की ज़िंदगी में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से फाउंडेशन लम्बे समय तक असरदार रहने और गहरी पैठ वाले कार्यक्रमों को अपना सहयोग देती है।

वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया

ग्रासरूट्स कॉमिक्स को सूचना एवं संवाद के माध्यम के रूप आम लोगों को मुहैया कराने की प्रतिबद्धता के साथ वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया बीते बीस वर्षों से कार्यरत है। कॉमिक्स से जन अभियान कार्यक्रम के तहत अनेक मुद्दों पर सफल अभियान भी आयोजित किए हैं।

अंक–iii, वर्ष–1 : जनवरी, 2022

(private circulation only)

इस प्रकाशन में महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम एच सी एल फाउंडेशन एवं हरित कार्यक्रम के सहयोगी संगठनों के आभारी हैं।

संपादकीय टीम : डॉ शांतनु बसु, हितेश सीताराम जलगांवकर, रवि कुमार शर्मा, ऐश्वर्या बालासुब्रमण्यन, आजम दानिश | सार्थक मेहरा

संपादकः शरद शर्मा | कवर पेज रेखांकन : गरिमा शर्मा

.....

web: www.hclfoundation.org | www.worldcomicsindia.com
email: hclfoundation@hcl.com | wci.hcl@gmail.com
Twitter: HCL_Foundation | Facebook: HCLFoundation

COMICS POWER! WORLD COMICS INDIA

एच सी एल फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया की एक पहल

HCL FOUNDATION